# कांग्रेस का डूबना तय पर क्या मोदी पीएम बनेंगे ?

-मनोज केमार झा

इस बार होने वाले आम चुनाव को लेकर ऊहापोह की स्थिति बनी हुई है। बहरहाल, इतना तो स्पष्ट हो चुका है कि कांग्रेस के नेतृत्व में सरकार बनने वाली नहीं है। संभवत: सोनिया और राहुल भी इस बात को समझ चुके हैं। 'युवराज' राहुल के नेतृत्व में कोई दम नहीं है। भाषण देते हुए वे जिस तरह चीखते-चिल्लाते हैं, उससे उनकी एक हास्यास्पद छवि ही बनती दिख रही है। कांग्रेस पूरी तरह नेतृत्वविहीन हो चुकी है और इस बात में दो राय नहीं कि इस बार उसका सूपड़ा पूरी तरह साफ़ हो जाएगा। संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन के धड़े छिटकने लगे हैं। राहुल की यूथ ब्रिगेड पूरी तरह अनुभवहीन है और चुनावी रणनीति के दांव-पेचों का उसे कोई ज्ञान नहीं है। इस ब्रिगेड को सत्ता विरासत में मिली है और इसे देश की वास्तविक स्थिति का कोई ज्ञान नहीं है। दूसरों के लिखे भाषण को रटकर मंच पर जमूरे की तरह पेश करने वालों को इस देश की जनता सत्ता सौंप नहीं सकती।

जहां तक सवाल भारतीय जनता पार्टी और उसके प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेन्द्र मोदी का है तो उनके लिए भी सत्ता की मंज़िल हासिल कर पाना बहुत आसान नहीं है। देश भर में घूम-घूम कर मोदी जो रैलियां कर रहे हैं और लाखों की भीड़ जुटा रहे हैं, वह एक तरह की हवाबाजी ही है। मोदी जहां जैसा मौका देखते हैं, वहां पूरे शातिरपने के साथ वैसी ही बात करते हैं। कभी खुद को चाय बेचने वाला तो कभी छुआछुत का शिकार तो कभी छप्पन इंच चौड़ी छाती वाला बता कर और मंचों से गरज-गरज कर अगर वे सोचते हैं कि चुनाव जीतकर देश का प्रधानमंत्री बन जाएंगे तो यह उनकी ख़ामख़्याली ही है।

यह अलग बात है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ उन्हें दिल्ली की गद्दी पर बैठाने के लिए पूरा जोर लगा रहा है, पर लालकृष्ण आडवाणी की प्रधानमंत्री बनने की महत्त्वाकांक्षा अभी पूरी तरह से मरी नहीं है। उन्होंने घोषणा कर दी है कि राजनीति में उनकी सक्रिय भूमिका बनी रहेगी। इधर, वक्त आने पर मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह भी उनके लिए चुनौती पेश कर सकते हैं। मध्यप्रदेश के गृहमंत्री बाबू लाल गौर अगला प्रधानमंत्री किसी यादव को बनाने की घोषणा कर रहे हैं। पता नहीं, उनका इशारा किस तरफ़ है, पर ये वही गौर हैं जिन्होंने भाजपा उपाध्यक्ष प्रभात झा के कहने पर अपने नाम के आगे 'यादव' लगाया था। भाजपा नेत्री सुषमा स्वराज को मोदी-समर्थक कतई नहीं कहा जा सकता।

बहरहाल, भाजपा तथाकथित 'मोदी लहर' के बावजूद जब दिल्ली में सरकार नहीं बना पाई तो देश की सत्ता पर काविज़ हो पाना उसके लिये असंभव-सा ही लगता है। मीडिया के तमाम सर्वे में यही बात उभर कर सामने आई है कि लोकसभा में किसी पार्टी को बहुमत नहीं मिलेगा। यह स्पष्ट है। बहुमत वाली सरकारों का ज़माना वी पी सिंह के समय से ही लद गया। हर सरकार जोड़-तोड़ से बनती है और जोड़-तोड़ कर चलती है। सांसदों की खरीद-बिक्री आम बात हो चुकी है।

इस चुनाव में वक़्त की नज़ाकत को भांपते हुए नरेन्द्र मोदी सांप्रदायिक मुद्दों को नहीं उठा रहे, विकास की बातें कर रहे हैं, पर उनके विकास का जो मॉडल है, वह देसी-विदेशी पूंजीपतियों के विकास का मॉडल है। अंबानियों के विकास का मॉडल है। देश को नीलाम करने और गिरवी रखने वालों का मॉडल है। एक तरफ़ अंबानी की पहुंच जहां सीधे सोनिया तक है, वहीं वे मोदी के साथ भी गलबहियां किये नज़र आते हैं। गुजरात के तथाकथित विकास के बावजूद वहां की आम जनता की हालत किसी से छुपी नहीं है। अपने को चाय बेचने वाला प्रचारित करने वाले मोदी का ऑफिस 250 करोड़ की लागत से बनाया गया है, क्या यह देश की जनता से छुपा है ?

जहां तक भ्रष्टाचार की बात है तो भाजपाई कांग्रेसियों से जरा भी कम भ्रष्ट नहीं हैं। यह अलग बात है कि कांग्रेस के नेतृत्व में संप्रग सरकार ने भ्रष्टाचार के मामले में वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया, पर यदि भाजपा सत्ता में होती तो यह भी अब तक देश को बेचकर खा चुकी होती। भ्रष्टाचार के आगे आत्मसमपर्ण करने का ताजा मामला है कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री भ्रष्टाचारी येदियुरप्पा को फ़िर से पार्टी में शामिल करना। ऐसी पार्टी यदि कांग्रेस को भ्रष्ट बताती है तो यह उसी तरह है जैसे सूप कहे चलनी से कि तुममें सत्तर छेद। कुल मिलाकर, भाजपा और कांग्रेस, दोनों एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। दोनो महाभ्रष्ट हैं, दोनों साम्प्रदायिक हैं और दोनों जनविरोधी हैं। भाजपा और मोदी के हाथ जहां मुसलमानों के खून से रंगे हुए हैं, वहीं युवराज राहुल ने ख़ुद स्वीकार किया है कि 1984 में सिखों के कत्लेआम में कांग्रेसियों की भूमिका थी। कांग्रेसियों की भूमिका थी तो सज्जन कुमार व अन्य दंगाइयों को सज़ा क्यों नहीं मिली ? इसका जवाब न राहुल के पास है, न सोनिया के पास, न ही कांग्रेस के किसी और कर्णधार के पास।

भाजपा की सत्ता कुछ राज्यों तक सीमित है। यह अलग बात है कि अभी वह कांग्रेस से ज़्यादा मजबूत स्थिति में है, पर उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, ओडिशा आदि राज्यों में क्या वह मतदाताओं को अपने पक्ष में कर पायेगी ? उत्तर प्रदेश में मुलायम आख़िरी दम तक मोदी का मुकाबला करेंगे। यही हाल बिहार में है। नितीश का जनाधार जिसे वोट बैंक कहें, मजबूत है। वे बिहार में मोदी की दाल गलने नहीं देंगे। कोलकाता में मोदी ने खूब 'पोरिबर्तन-पोरिबर्तन' की चीख-पुकार मचाई, पर 'बंगाल की शेरनी' गुंडा फौज साथ लेकर चलने वाली ममता से टक्कर ले पाएंगे, इसमें संदेह है।

मोदी के लिये दिल्ली की राह कठिन है, पहुंच पाना मुश्किल लगता है, ताज हासिल करना तो दूर की बात है।

इधर, मुलायम-नितीश-शरद और कुछ अन्य क्षत्रप वामपंथियों के साथ मिलकर केंद्रीय सत्ता हासिल करने की कोशिश में फ़िर से थर्ड फ्रंट बनाने की तैयारी में लग चुके हैं। थर्ड फ्रंट मानो बरसाती मेढक है जो चुनावी सीजन आते ही टर्राने लगता है। देखना है, इन्हें किस हद तक सफलता मिलती है। नितीश की छवि बाहर से कुछ साफ-सुथरी जरूर बनी हुई है, पर माफ़िया उनके साथ शुरू से जुड़ा है। जहां तक मुलायम का सवाल है तो उनके 'गुंडाराज' को उनके पुत्र अखिलेश ने आगे बढ़ाते हुए 'महागुंडाराज' में बदल डाला है। अखिलेश के शासन पर मुजफ़्फरनगर दंगों का बदनुमा दाग लगा हुआ है, इसके बावजूद सरकार 'सैफई महोत्सव' के दौरान बॉलीवुड नर्तकियों का मुजरा देखने में तल्लीन रही। सरकारी खर्चे पर मंत्रियों को अय्याशी करने के लिये विदेश भेजा गया। 'कुंडा के गुंडा' रघुराज प्रताप सिंह को भी। इधर, आजम खां की भैंसों ने भी मीडिया और जनता के मनोरंजन का अच्छा-खासा मौका उपलब्ध कराया।

एक बात साफ़ है कि मुजफ़्फरनगर दंगे के बाद मुसलमानों का भरोसा मुलायम से उठ गया है। अब वो समाजवादी पार्टी को वोट देने से रहे। इसका फ़ायदा मायावती को मिल सकता है, पर मोदी को तो हर्गिज नहीं मिलेगा।

ममता थर्ड फ्रंट के साथ कैसे आएंगी, क्योंकि इस फ्रंट में वामपंथियों की मुख्य भूमिका रहेगी। यद्यपि वामपंथी पिछले कुछ अरसे से राजनीतिक परिदृश्य से गायब ही हैं, पर मुलायम ने जब से थर्ड फ्रंट बनाने की सुगबुगाहट शुरू की है, ये उत्साहित हैं। वैसे, कुछ नेताओं का कहना है कि थर्ड फ्रंट चुनाव के बाद ही अस्तित्व में आ पाएगा। यानी चुनाव परिणाम सामने आने के बाद के गणित पर आधारित यह पूर्णत: अवसरवादी गठजोड़ होगा। एक बात स्पष्ट है, मुलायम-नितीश-ममता-नवीन पटनायक आदि मोदी की राह में बहुत बड़ी बाधा बन कर सामने आएंगे।

इस बीच, दिल्ली में सत्ता में आई आम आदमी पार्टी ने जनता के सामने एक मुद्दा तो उछाल ही दिया है। आम आदमी पार्टी और इसके नेता अरविंद केजरीवाल कांग्रेस-भाजपा एवं अन्य भ्रष्ट दलों को फूटी आंखों नहीं सुहा रहे। लेकिन अब तक रंग-बिरंगे नेताओं और उनके भ्रष्टाचार से आजिज आ चुकी जनता को इस पार्टी में नई संभावना दिखी है। कांग्रेस ने भाजपा को सत्ता से दूर रहने के लिए इसे समर्थन दिया और केजरीवाल की सरकार बनी, पर अब यह कांग्रेस के गले की हड्डी बन गई है। केजरीवाल सरकार चलाते हुए भ्रष्ट और सड़े हुए 'तंत्र' के विरोध की राजनीति को आगे बढा रहे हैं। वे एक नया प्रयोग कर रहे हैं । बदलाव चाहने वालों की निगाहें उनपर लगी हुई हैं। आम आदमी पार्टी भी लोकसभा चुनाव में अपना दम दिखायेगी। इस पार्टी की पूंजी वास्तव में जनता की शक्ति ही है। यह जनाकांक्षाओं की प्रतीक बन कर उभर रही है। यह लोक सभा चुनावों में किस हद तक सफल होगी, इसके बारे में अभी कुछ कहना उचित नहीं लगता, पर जनता बदलाव चाहती है और वह सोई हुई नहीं है, यह स्पष्ट हो चुका है। संभव है, पूंजीवादी मीडिया के सर्वे के विरुद्ध 'आप' कहीं कुछ राज्यों में एक बड़ी ताकत बनकर न उभरे। कुल मिलाकर देश की राजनीति में बदलाव का दौर शुरू हो चुका है। आने वाले चुनाव में नाटकीय परिवर्तन संभव हैं। ■

## तुर्की-ब-तुर्की

**नरेन्द्र मोदी**
लुटता रहेगा जनः लूट होगी सधन

**60 साल बनाम 60 महीने**

**"आपने कांग्रेस को 60 साल दिये। हमें 60 महीने तो दीजिये सेवा करने के।"**

### हमारा कहना है-

- हम भी जानते हैं। जनता भी जानती है। नरेन्द्र मोदी जी आप 60 महीने में कांग्रेस के 60 साल को भूलवा देंगे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में आप की महारत हर काम को संगठित रूप से करने की बन गयी है। जाहिर है कांग्रेस की असंगठित लूट को भी आप संगठित कर ही देंगे।

- आपके दावे का निहितार्थ यही तो है कि कांग्रेसियों ने जितना 60 वर्ष के अपने शासन में इस देश को लूटा है उससे कई गुणा आप अपने 60 महीने के शासन में कर दिखायेंगे।

- हां, एक मामले में आप कांग्रेसियों को लाख चाह कर भी पीछे नहीं छोड़ सकते। यह मामला है कार्पोरेट लुटेरों को जनता का खून चूसने व राष्ट्रीय संपदा के बेलगाम दोहन की छूट का। क्योंकि इस मामले में तो कांग्रेसियों ने पहले ही अम्बानियों, टाटाओं, बिड़लाओं, जिंदलों वगैरह-वगैरह को शत प्रतिशत सरकारी सहयोग प्रदान कर रखा है। आप भी इससे अधिक और क्या कर पायेंगे ?

  बस इतना हो सकता है कि कुछ नाम ऊपर नीचे हो जायें। जैसे आपके चहेते अडानी समूह की व्यापक लूट में हिस्सेदारी कुछ और ज़्यादा हो जायेगी। अन्यथा ये तमाम कार्पोरेट और इनका तन्त्र तो वैसे ही संगठित लूट के प्रति पूरी तरह समर्पित है। उन्हें आपकी सांगठनिक क्षमता मिले न मिले, खास फ़र्क नहीं पड़ता।

- कांग्रेस ने 60 साल ग़रीब की बात करने और अमीर की जेब भरने में लगाये हैं। आप भी करने तो वही जा रहे हैं। दावा तो आप 'चायवाला' होने का करते हैं। पर यदि वास्तव में आपकी चायवालों से कोई सहानुभूति होती तो इस देश के लाखों चायवालों का जीवन अपमान और ग़रीबी में न बीत रहा होता। इस मामले में तो आप कांग्रेस से भी गये गुजरे हैं । कांग्रेस, कम से कम ग़रीबों के नाम के कानून तो बना देती है जो बेशक काग़जों में सड़ते रहे। पर आप तो चायवालों की भलाई की एक घोषणा भी आज तक नहीं कर सके हैं।

- क्या यह भी खोलना पड़ेगा कि मोदी जी आप 'चायवालो" के पक्ष में एक भी कल्याणकारी घोषणा, बेशक मुंह दिखाने के लिये सही, क्यों नहीं कर पा रहे हैं ? क्योंकि साथ में आपको अन्य ग़रीब तबकों को लेकर ही नहीं, गरीबी को लेकर भी घोषणायें करनी पड़ेगी। इस शातिरी में अभी आप कांग्रेस से उन्नीस ही ठहरते हैं।